Rohtas Mahila College, Sasaram, 01-07-21
Dr. Aman Murmu, Dept of Psychology, B.A Part I H.P.I

(Topic - प्रेरक के प्रकार - Types of motives):-
प्रेरक दो प्रकार के होते हैं। (A) जैविक प्रेरक (Biogenic motive) तथा (B) सामाजिक प्रेरक।

(A) जैविक प्रेरक (Biogenic motives) - जैविक प्रेरक को प्राथमिक प्रेरक या शारीरिक प्रेरक अथवा जन्मजात प्रेरक भी कहा जाता है। यह प्रेरक जन्म के समय से ही बच्चों में उपस्थित रहता है। इस पर वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है। यह प्रेरक जीवन के लिए आवश्यक होता है। जैविक प्रेरक कई प्रकार के होते हैं। जो अग्रलिखित हैं। (i) भूख (ii) प्यास (iii) यौन (iv) नींद (v) मातृक प्रणोदन आदि।

(i) भूख (Hunger) - जैविक प्रेरकों में भूख एक महत्वपूर्ण प्रेरक है। यही प्रेरक शक्ति का स्रोत है। भिन्न भिन्न कार्यों को करने के लिए शरीर को शक्ति की आवश्यकता होती है। भूख लगने पर व्यक्ति भोजन की तलाश करता है और भोजन से ही शरीर में शक्ति का निर्माण होता है। हमारे जीवन में इस प्रेरक का कितना महत्व है, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। शरीर में भोजन का अभाव होने पर आमाशय सिकुड़ता है जिसके कारण व्यक्ति को भूख की पीड़ा महसूस होती है। जब व्यक्ति भोजन करता है तो आमाशय का सिकुड़न रुक जाता है, जिससे व्यक्ति की भूख समाप्त हो जाती है

(ii) प्यास (Thirst) - भूख की तरह प्यास भी एक जैविक प्रेरक है। जीवित रहने के लिए इस प्रेरक की संतुष्टि भी जरूरी है। अध्ययनों से ज्ञात है कि भूख की अपेक्षा प्यास का प्रेरक अधिक प्रबल है। अतः कहने की आवश्यकता नहीं है कि हमारे जीवन में प्यास का एक महत्वपूर्ण स्थान है। शरीर में जब पानी की कमी हो जाती है तो मुँह और कंठ सूख जाते हैं और प्राणी अपनी प्यास बुझाने के लिए परेशान हो जाता है। जब शरीर में पानी पहुँच जाता है तब मुँह और कंठ तर हो जाते हैं और परेशानी दूर हो जाती है तथा प्यास की अनुभूति खत्म हो

Scanned with CamScanner

जाती है।

(iii) यौन (Sex) - यौन एक जीवित जैविक प्रेरक होते हुए भी भूख तथा प्यास से भिन्न है (A) यौन की संतुष्टि जीवन को कायम रखने के लिए आवश्यक नहीं है जबकि भूख तथा प्यास की संतुष्टि आवश्यक है। (B) भूख तथा प्यास की उत्पत्ति तब होती है जबकि शरीर में क्रमशः भोजन तथा पानी की कमी हो जाती है परन्तु यौन में किसी वस्तु का अभाव नहीं होता है। (C) भूख तथा प्यास का प्रेरक शुरु से ही सक्रिय रहता है मगर यौन प्रेरक एक खास उम्र आने पर सक्रिय होता है। इन अन्तरों को होते हुए भी भूख तथा प्यास की तरह यौन भी तनाव पैदा करता है और प्राणी को क्रियाशील बनाता है।

(iv) मातृक प्रणोदन (maternal Drive) - जैविक प्रेरक में मातृक प्रेरक की गिनती की जाती है। अक्सर देखा जाता है कि माताएँ अपने बच्चों के प्रति आकर्षित होती हैं, पालती पोषती हैं और रक्षा करती हैं। अतः इस प्रकार के व्यवहारों को उत्पन्न करने वाले प्रणोदन को ही मातृक प्रणोदन कहा जाता है। कुछ वर्ग जाति में तो यह प्रेरक भूख प्यास या यौन से भी अधिक प्रबल होता है। वार्डन (Warden) ने अपने अध्ययनों पाया कि चूहियों में यह प्रेरक सबसे अधिक सबल होता है। चूहिया अपने बच्चों की रक्षा करने के लिए बड़ी बड़ी बाधाएँ सह सकती है। वे विद्युत धारा को भी पार करके अपने बच्चों तक पहुँच जाती है।

(v) नींद (Sleep) - नींद या निद्रा भी शारीरिक आधार वाला प्रेरक है। नींद की आवश्यकता मनुष्य के साथ साथ पशु में भी देखी जाती है। भूख तथा प्यास की तरह यह भी एक जैविक प्रेरक है। यदि प्राणी को एक खास समय तक सोने नहीं दिया जाए तो वह मर जाएगा। थकान के कारण नींद जल्दी आती है। कार्य करने से शक्ति का ह्रास होता है जिसको फिर प्राप्त करने के लिए सोना आवश्यक हो जाता है।

(B) सामाजिक प्रेरक (social motives)

सामाजिक प्रेरक का अर्थ ऐसे प्रेरकों से है जो वातावरण के प्रभाव से सीखे जाते हैं। ऐसे प्रेरकों को अर्जित प्रेरक भी कहते हैं। इन्हें मनोवैज्ञानिक प्रेरक भी कहा जाता है, क्योंकि ऐसे प्रेरकों का शारीरिक आधार नहीं होता है, बल्कि मनोवैज्ञानिक आधार होता है।

Scanned with CamScanner